दिव्या : कथ्य और शिल्प

श्री श्याम नन्दन (सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार) - 845401
Email: shyamnandan@mgcub.ac.in

स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी, चौथा सेमेस्टर

प्रश्नपत्र: हिन्दी उपन्यास (HIND3010)

अनुक्रम :-

- उपन्यासकार यशपाल
- दिव्या
  - कथ्य :-
    - स्त्री-शोषण के विविध आयाम
    - वर्णाश्रम-व्यवस्था और जाति आधारित भेदभाव
    - ब्राह्मण - बौद्ध संघर्ष
    - मद्र की कुल गणराज्य व्यवस्था
    - इतिहास अथवा कल्पना
  - शिल्प :-
    - कथानक संयोजन
    - भाषा एवं शैली
    - पात्र एवं चरित्र-चित्रण
    - संवाद-योजना
    - देशकाल एवं वातावरण
    - उद्देश्य
- निष्कर्ष
- सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

उपन्यासकार यशपाल : -

- यशपाल का जन्म 3 दिसंबर 1903 ई. में तथा मृत्यु 26 दिसंबर 1976 ई. में हुई |
- यशपाल ने 'दादा कामरेड' (1941 ई.) , 'देशद्रोही' (1943 ई.) , 'दिव्या' (1945 ई.) , 'पार्टी कामरेड' (1946 ई.) , 'मनुष्य के रूप' (1949 ई.) , 'अमिता' (1956 ई.) , 'झूठा सच' (1958 ई.) , 'बारह घंटे' (1962 ई.) , 'अप्सरा का शाप' (1965 ई.) 'क्यों फँसे' (1968 ई.) , 'तेरी मेरी उसकी बात' (1974 ई.) आदि कई उपन्यासों की रचना की है|
- यशपाल यथार्थवादी परंपरा के उपन्यासकार माने जाते हैं|
- यशपाल ने स्वतंत्रता आंदोलन मे क्रांतिकारी के रूप में कार्य किया था|
- मार्क्सवादी दृष्टिकोण से रचना करने वाले उपन्यासकार हैं|
- सन् 1970 में भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया गया |
- 'राजनीतिक उपन्यासों को जो नया स्वरूप यशपाल ने दिया उसने हिन्दी में ऐतिहासिक श्रृंखला बनायी|

स्त्री-शोषण के विविध आयाम:-

- वीर, पराक्रमी पृथुसेन से प्रेम के बावजूद दिव्या उससे विवाह नहीं कर पाती क्योंकि पृथुसेन दास-पुत्र है और दास-पुत्र से द्विज-कन्या का विवाह वर्णाश्रम व्यवस्था में स्वीकार्य नहीं है|
- पुरोहित चक्रधर के घर दासी के रूप मे दिव्या के मातृत्व का शोषण, हिन्दी उपन्यास साहित्य में दासी के रूप में स्त्री-शोषण का अनूठा उदाहरण है।
- पुत्र शाकुल के जीवन और अपने मातृत्व की रक्षा के लिए दारा, बौद्ध धर्म के विहार में भी शरण नहीं पाती क्योंकि बौद्ध धर्म में अभिभावक की अनुमति के बिना संघ, स्त्री को शरण नहीं दे सकता।
- पृथुसेन द्वारा दिव्या को सपत्नी रूप में स्वीकारने की बात पर सीरों बहुपत्नीवाद पर आधारित स्त्री शोषण का विरोध करते हुए कहती है कि 'आर्यों में स्त्री केवल भोग्य सम्पति और दासी है।'
- उपन्यास में यशपाल ने दिव्या के माध्यम से इस सामाजिक यथार्थ को चित्रित किया है कि स्त्री-योनि में जन्म लेना ही उनके शोषण का एक मात्र आधार है|

वर्णाश्रम-व्यवस्था और जाति आधारित भेदभाव:-

- श्रेष्टी प्रेस्थ प्रचुर धन संचयकर और साधारण जन से सम्मान पाकर भी गणपरिषद् का सदस्य नहीं बन पाया क्योंकि कुलीन नहीं, दास था |
- पृथुसेन, दिव्या की शिविका को कन्धा नहीं दे सकता क्योंकि 'दासपुत्र को अभिजात वंश के युवकों के साथ शिविका में कन्धा देने का अधिकार नहीं हैं।'
- पृथसेन सेना में उच्च पद का अधिकारी मात्र इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि वह अभिजात कुल का न होकर दास-पुत्र है।
- वर्णाश्रम व्यवस्था के कारण ही दिव्या का विवाह पृथुसेन से नहीं हो पाया क्योंकि दिव्या, धर्मस्थ देव शर्मा की प्रपौत्री और द्विज-कन्या है जबकि पृथुसेन दास-पुत्र है।
- उपन्यासकार ने बौद्धकालीन भारत में वर्णाश्रम व्यवस्था में समाज में जाति आधारित ऊँच-नीच का भेदभाव और जाति आधारित वैमनस्यता का यथार्थ चित्रण किया है।

ब्राह्मण-बौद्ध संघर्ष :-

- दिव्या में ब्राह्मण-बौद्ध संघर्ष भी चित्रित है।
- वर्णाश्रम धर्म के समर्थक, बौद्धों-श्रमणों से घृणा करते हैं क्योंकि बौद्ध धर्म के विचारों के प्रभाव से उनकी सामाजिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा|
- मगध के राजा पुष्यमित्र से उनका लगाव अधिक है क्योंकि उसने मगध में वर्णाश्रम धर्म को पुनर्स्थापित किया।
- वर्णाश्रम धर्म के समर्थक मद्र में भी ब्राह्मण-धर्म की स्थापना करना चाहते है|

मद्र की गणराज्य-व्यवस्था:-

- वर्णाश्रम धर्म, यवन और बौद्ध-धर्म के अनुयायी कुलों को मिलाकर मद्र में कुल-गणराज्य की स्थापना की गई थी।
- कुल-गणराज्य के कारण सागल में सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार की थी कि दासपुत्र भी, सामन्त पुत्रों, अभिजात-कुलीन राजपुत्रों के साथ प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धा कर सकता है |
- प्रतिभाशाली होने पर दास-पुत्र 'सर्वश्रेष्ठ खड़गधारी' का सम्मान भी प्राप्त कर सकता है।
- पृथुसेन अन्य सामन्त पुत्रों के साथ ही तक्षशिला में शिक्षा ग्रहण करता है।
- पृथुसेन के विरूद्ध तलवार निकालने के कारण अभिजात वंश के सामन्त पुत्र को मद्र से निष्कासित कर दण्डित किया गया।
- दासी दारा के पुत्र की हत्या के अपराध में पुरोहित चक्रधर को दो सौ स्वर्ण मुद्रा राजदण्ड के रूप में राजकोष में जमा करने का दण्ड मिला। इससे पता चलता है कि बौद्धकालीन भारत में ब्राह्मणों के लिए भी दंड का प्रावधान था |

इतिहास अथवा कल्पना :-

- 'दिव्या' में यशपाल ने किसी विशिष्ट ऐतिहासिक पात्र अथवा घटना को कथावस्तु का आधार नहीं बनाया है।
- मिनाण्डर, पुष्यमित्र और पतंजलि जैसे नाम उपन्यास में आए हैं, जिससे दिव्या के ऐतिहासिक काल निर्धारण में सहायता मिलती है किन्तु ये पात्र के रूप में उपन्यास मे नहीं आए हैं|
- स्वयं यशपाल के अनुसार -'दिव्या', इतिहास नहीं; ऐतिहासिक कल्पना मात्र है| ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति और गति का चित्र है| लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग भर देने का प्रयत्न किया है|'

शिल्प :

कथानक संयोजन :-

- 'दिव्या' की कथावस्तु में मुख्य कथा दिव्या की है जबकि पृथुसेन, मारिश और रूद्रधीर की कथा, सहायक कथा एवं धर्मस्थ देव शर्मा, चक्रधर, रत्नगर्भा, सीरों, प्रेस्थ, मल्लिका आदि की कथाएं, प्रासंगिक कथाएं हैं।
- सभी सहायक एवं प्रासंगिक कथाएं, मुख्य कथा के विकास की दृष्टि से सहायक एवं सफलतापूर्वक संयोजित हैं।
- 'एक कृति के रूप में 'दिव्या' की सबसे बड़ी सफलता उसकी संरचना और स्थापत्य कला में है। उसके कथानक में किसी स्तर पर कैसा भी बिखराव न होकर एक सहज एवं क्षिप्र विकास आरम्भ से अन्त तक बना रहता हैं।'

भाषा एवं शैली:-

- उपन्यास की भूमिका में स्वयं यशपाल ने लिखा है कि 'अतीत के रूप-रंग की रक्षा के लिए इस पुस्तक में कुछ असाधारण भाषा और शब्दों का प्रयोग आवश्यक हुआ है|'
- यशपाल ने औपन्यासिक वातावरण की दृष्टि से युगानुकूल प्रतीत होने वाली भाषा का प्रयोग किया है।
- "इस दृष्टि से उल्लेखनीय बात यह है कि यशपाल की वाक्य रचना सरल है| वे लम्बे और जटिल वाक्य नहीं रचते हैं। इसलिए तत्सम् शब्द रहते हुए भी भाषा दुर्बोध नहीं हुई हैं|"
- उपन्यासकार ने 'भाषा और शैली का निर्माण विषय-वस्तु तथा उसके देशकाल के आग्रह के आधार पर करते हुए औपन्यासिक विवेक एवं भाषिक कौशल का परिचय दिया है|
- उपन्यास की कथा-प्रस्तुति में अन्य पुरुष एवं वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है|

पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

- दिव्या, उपन्यास की केन्द्रीय पात्र और नायिका है| |
- आचार्य रूद्रधीर- वर्णाश्रम धर्म, पृथुसेन- बौद्ध धर्म तथा मारिश- चार्वाक दर्शन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र के रूप उपन्यास में आए हैं |
- दिव्या का चरित्र तत्कालीन सत्ता, व्यवस्था एवं परंपरा के समक्ष स्त्री की गरिमा के साथ ही मानव-मूल्यों कसौटी बनकर उभरा है |
- पुरुष-प्रधान भारतीय समाज में स्त्री-शोषण के विभिन्न आयामों का उद्घाटन करने वाली दिव्या, स्त्री के स्वत्व और स्वतन्त्रता की गरिमा के लिए संघर्ष करने वाली पात्र के रूप मे चित्रित हुई है|

संवाद-योजना

- ‘दिव्या’ में संवाद-योजना युगीन वातावरण के अनुकूल है|
- कथोपकथन और संवाद छोटे एवं तत्सम् शब्दों से युक्त किन्तु बोधगम्य एवं पात्रानुकूल हैं|
- पात्रों के संवाद प्रसंगानुकूल, सहज, स्वाभाविक और प्रभावशाली हैं|

देशकाल एवं वातावरण :-

- ‘दिव्या’, बौद्धकालीन भारत की ‘ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति और गति का चित्र है’|
- उपन्यास में बौद्धकालीन भारतीय समाज के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक पक्षों का चित्रण किया गया है|
- मिनाण्डर, पुष्यमित्र और पतंजलि जैसे नाम उपन्यास में आए हैं, जिससे दिव्या के ऐतिहासिक काल निर्धारण में सहायता मिलती हैं|
- उपन्यास में कोई भी ऐतिहासिक पात्र ऐतिहासिक न होने के बावजूद, पढ़ते हुए उपन्यास का ऐतिहासिक वातावरण जीवंत और विश्वसनीय प्रतीत होता है|

उद्देश्य:-

- यशपाल ने दूसरी शताब्दी ईसापूर्व के बौद्धकालीन भारत के 'ऐतिहासिक वातावरण' के आधार पर 'ऐतिहासिक कल्पना' में 'यथार्थ' का रंग भरकर और अतीत का मनन और चिन्तन करते हुए वर्तमान की व्याख्या कर भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्ति का संकेत प्राप्त करने के प्रयोजन से 'दिव्या' की रचना की है।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर सामयिक स्त्री-शोषण के साथ ही कुछ अन्य समस्याओं को आधुनिक दृष्टि से देखना और प्रस्तुत करना भी उपन्यासकार का उद्देश्य है|

निष्कर्ष:-

उपन्यास में यशपाल ने दिव्या के माध्यम से इस तीखे सामाजिक यथार्थ को चित्रित किया है कि स्त्रियों के शोषण का आधार ‘लैंगिक’ है। स्त्री-योनि में जन्म लेना ही उनके शोषण का एक मात्र आधार है। फिर भी ’दिव्या’ नारी के स्वत्व , स्वतन्त्रता और स्त्रीत्व के सम्मान की संघर्षगाथा के रूप में जीवंत ऐतिहासिक परिवेश की पृष्ठभूमि पर यथार्थवादी आधुनिक दृष्टि से सामयिक स्त्री-शोषण की समस्या की अत्यंत सहजता, विश्वसनीयता और मार्मिकता से प्रभावशाली प्रस्तुति करने में सफल उपन्यास है|

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची :-

- दिव्या, यशपाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण - 2017
- हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2016
- दिव्या का सौन्दर्य , खगेन्द्र ठाकुर, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण -2004
- दिव्या का महत्व -मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण -2018,

धन्यवाद